शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा बच्चों से पूछ रहे हैं, यहाँ तुम सवेरे से लेकर बैठे हो, तुम स्टूडेंट तो हो ही, तो यहाँ बैठे ज़रूर यह ख्याल करते होंगे कि हमको शिवबाबा पढ़ाने (आ)ते हैं। हम इस पढ़ाई से सूर्यवंशी और चंद्रवंशी बनेंगे; क्योंकि हम राजयोग सीख रहे हैं विष्णुपुरी स्वर्ग का मालिक बनने के लिए। इस खयालात में बैठे हो वा किसको ज़मीनदारी, बाल–बच्चे, धंधा–धोरी आदि याद आता है? बुद्धि में आना चाहिए यह है गीता पाठशाला। हमको भगवान पढ़ाते हैं और हम श्री लक्ष्मी अथवा श्री नारायण अर्थात् उनके कुटुम्ब के भाती बनने वाले हैं। यह है ही राजयोग। यह तो बच्चों को बुद्धि में आना चाहिए, हम बाबा से डायरैक्ट सुनकर सूर्यवंशी घराने के भाती बनेंगे। लक्ष्मी–नारायण का चित्र भी सामने है। हमारा राज्य होगा। जैसे कौरव काँग्रेस भी समझती है भारत हमारा देश है, हमारा राज्य है; परन्तु वो कोई नर्क और स्वर्ग को नहीं जानते। सिवाय तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता नहीं है कि स्वर्ग किसको कहा जाता। तुम बच्चे ही समझते हो हम बाप से ही स्वराज्य विद्या स्वर्ग के लिए पा रहे हैं। हम स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। यह अन्दर में सिमरण करना है। जैसे स्कूल में स्टूडेंट की बुद्धि में रहता है हम यह बैरिस्टर–इंजीनियर आदि बनने लिए पढ़ रहा हूँ। तुमको भी यह याद रहता है या भूल जाते हैं? तुम तो बहुत ऊँच ते ऊँच भगवान के स्टूडेंट हो। तुमको ऊँच ते ऊँच देवता बनाने लिए बाप पढ़ा रहे हैं। तुम हो उनके बच्चे। आत्माएँ इस शरीर द्वारा भविष्य मर्तबे को याद कर रही है या शरीर के संबंधियों जिस्मानी मिल्कियत धंधे आदि को याद करते रहते हैं? यहाँ जब आते हो तो समझना चाहिए हमको बेहद का बाप पढ़ाने आते हैं। बेहद का अर्थात् विश्व का मालिक बनाने। फिर राजा–रानी बने या प्रजा। मालिक तो बनते हैं ना। नई दुनिया में है ही सूर्यवंशी घराना। यह तो समझते हो ना, हम अपनी राजाई करेंगे। ऐसे नहीं यहाँ बैठे बाहर की बातें याद आती रहे। बाबा जानते हैं बाहर में, घरघाट में, खेती बाड़ी में रहते हो, वहाँ इतना याद नहीं रहता। यहाँ जब आते हो तो बाहर की धंधे–धोरी आदि की खयालात छोड़ आनी चाहिए। यहाँ वो याद ना रहनी चाहिए। तुम उस कलियुग दुनिया में हो ही नहीं। ..... तुम संगम पर हो। कलियुग को छोड़ दिया है। तुम बाहर में रहते हो, (जहाँ) कलियुग है। यह जगह ..... खास है यह है संगमयुग। इसलिए मधुबन गाया जाता है। यहाँ तुमको आपस में इस नॉले(ज) का ही वातावरण करना है। और कोई वातावरण नहीं। यहाँ जो ज्ञान की बातें सुनते हो वो ही वर्णन होना चाहिए। विचार–सागर–मंथन होना चाहिए। जितना टाइम मिले यहाँ चित्रों के आगे आए बैठो। इनको ही देखते रहो। ब्राह्मणियाँ जो ले आती हैं उनपर बड़ी रेस्पॉन्सिबिलिटी है। बहुत ओना रखना है पढ़ाई का। जैसे टीचर को ओना होता है हमारे स्कूल से अगर कम पास होंगे तो इज्ज़त चली जावेगी। जिसके स्कूल में बहुत पास होते हैं वो अच्छा टीचर माना जाता है। तो यहाँ ब्राह्मणियों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। यहाँ आते ही हैं संगम पर। यह बीच सागर है। तुम ब्रह्माकुमारियाँ बाहर गामरों आदि में रहती हो, समझाती हो, वो भी कलियुग है। यह मधुबन है संगमयुग, जहाँ डायरैक्ट तुम बाप से सुनते हो। वहाँ तो ब्राह्मणियाँ सुनाती हैं। यहाँ तो शिवबाबा सन्मुख समझाते हैं। यहाँ का प्रभाव बहुत है। ऐसे नहीं, यहाँ भी धंधा–धोरी, घरबार याद पड़ता रहे। बाप समझेंगे यह जाकर साधारण प्रजा बनेंगे। तुम यहाँ आए हो राजाई पद पाने लिए। तो अंदर में यह खुशी रहनी चाहिए। चित्र भी बहुत मदद करते हैं। इष्ट देवताओं के, गुरु के चित्र घर में रखते हैं याद करने लिए; परन्तु उनको (याद) करने से कुछ मिलता नहीं। भक्तिमार्ग में तो कुछ करते हैं, नीचे ही उतरते आए हैं। अब तुम बच्चों को ऊँच (जाने) का पुरुषार्थ करना है। शिवबाबा का चित्र रख दो तो घड़ी–2 याद करने की टेव पड़ जाए। तुम जानते हो शिवबाबा से हमको वर्सा मिलता है। आगे गुरुओं को, कृष्ण को, हनुमान को याद करते थे। अब शिवबाबा स(न्मुख) कहते हैं मुझे याद करो। त्रिमूर्ति का चित्र तो बड़ा अच्छा है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको यह सुनाते। यह चित्र तो सदैव पॉकेट में रख दो। घड़ी–2 देखते रहो तो याद पड़े। बाबा भक्त था तो लक्ष्मी–नारायण का चित्र पॉकेट में, तकिया के नीचे, गददी पर, जहाँ–तहाँ साथ में रखा रहता था। उनसे मिलता कुछ भी न

था। अब तो शिवबाबा से बहुत प्राप्ति होती है। तो उस एक को ही याद करना है। इसमें ही माया सामना करती है। ज्ञान में तो भल बहुत तीखे जाते हैं, सेन्टर भी सम्भालते हैं; परन्तु योग में नहीं रह सकते। योग में ही माया इन्टरफेयर करती है। कहते हैं– बाबा, भूल जाता है। ऐसे नहीं कहते– बाबा, 84 जन्मों का चक्कर भूल जाता है। वो तो कोई मूर्ख भी ना भूले। चक्कर को समझना तो बहुत सहज है। याद भूल जाती है। ऐसे भी नहीं यहाँ रहने वाले जास्ती याद करते हैं। नहीं। जिस बाप से हम गौरा बनते हैं उनको जानते ही नहीं। माया का परछाया बहुत पड़ जाता है। मूल बात है ही याद की। बाबा जानते हैं बहुत अच्छे फर्स्ट क्लास बच्चे भी याद में नहीं रह सकते। योग में रहने से ही देह–अभिमान कम होगा। बहुत मीठे रहेंगे। देह–अभिमानी होने से मीठा नहीं बनते। बिगड़ते रहते हैं। ब्राह्मणियों में ऐसे बिगड़ते हैं। बाबा सबके लिए नहीं कहते। कोई तो सपूत भी हैं। सपूत उनको कहा जाता है जो अच्छी रीति योग में रहते हैं। उनसे कोई उल्टी–सुल्टी बात नहीं होगी। मित्र–संबंधी आदि सब भूल जावेंगे। कोई भी देहधारी को याद ना करना है। हम नंगे आए थे फिर नंगे ही जाना है घर। अब तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है जिससे तुम अपने घर को भी जानते हो, अपनी राजधानी को भी जानते हो। यह भी तुम बच्चे समझते हो, शिवबाबा कोई काला लिंग नहीं है; जैसे दिखाते हैं। वो तो बिंदी मिसल है। यह भी जानते हो, अब हम जावेंगे घर। वहाँ हम आत्माएँ अशरीरी रहती हैं। अब फिर अशरीरी बनना है। अपन को आत्मा समझ पतित–पावन बाप को याद करना है। आत्मा क्या है वो तो समझाया है। आत्मा अविनाशी है। उनमें 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। उसका अंत नहीं होता। थोड़ा समय मुक्ति में जाए फिर पार्ट में आना पड़ता है। तुम आलराउण्ड पार्ट बजाते हो। यह बच्चों को याद रहना चाहिए। अब हम घर जाते हैं। बाप को याद करने से सतोप्रधान बन जावेंगे। यहाँ तुमको कोई धंधा–धोरी आदि नहीं है। तुम यहाँ पूरे संगम पर हो। अब हम जा रहे हैं। तुम ..... बैठेंगे। बुद्धि में रहता है (हम जा) रहे हैं। ..... कोई चलते–2 ..... जाते हैं। फँस मरते हैं। इस पर भी शास्त्र में कहानी है। अब तुम जानते हो हम उस पार जा रहे हैं। ..... शिवबाबा है। कृष्ण को खेवैया वा बागवान नहीं कहा जाता। वास्तव में गीता में भी है शिव भगवानुवाच्य। बागवान शिवबाबा है। पतित–पावन वो है। कृष्ण की तरफ सबकी बुद्धि जा ना सके। यह अच्छी रीति समझाना है; क्योंकि मनुष्यों की बुद्धि तो भटकती रहती है। बाप आकर भटकने से छुड़ाते हैं। बाप कहते हैं देह–अभिमान छोड़ो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तब ही तुम स्वर्ग का मालिक बनेंगे। यह बातें भूलनी ना चाहिए। यहाँ बहुत अच्छा रिफ्रेश होकर जाते हैं, अनुभव सुनाते हैं। बाहर फिर वैसे के वैसे हो जाते। मित्र–संबंधी आदि का मुँह देखकर एकदम लुभायमान हो जाते। तुम बच्चे आशुक हो ना, तो काम–काज करते माशुक को याद करते रहना चाहिए तब ही ऊँच पद पावेंगे। अगर अब पुरुषार्थ कर ना पावेंगे तो कल्प–कल्पांतर ना पावेंगे। तुम कहते हो ना हम डबल सिरताज बनेंगे। पुरुषार्थ ना करेंगे तो सिरताज भी ना मिल सकेंगे। यहाँ बच्चे आते हैं, टाइम वेस्ट ना करना चाहिए। और तो कुछ भी यहाँ है नहीं। सिर्फ दिलवाला मंदिर है तुम्हारा यादगार। वो तुम देख सकते हो। ऊपर में वैकुण्ठ खड़ा है। झाड़ में भी तुम्हारा क्लीयर है। नीचे राजयोग में बैठे हैं। ऊपर में राजाई खड़ी है। हूबहू जैसे मंदिर बना हुआ .... वैसे यह चित्र हैं। अब यह मंदिर जिन्होंने बनाया है वो तो बिल्कुल नहीं जानते हैं। अहमदाबाद में भी बड़े साहुकारों की कमेटी है, जो बहुत खर्चा कर यह मंदिर बनवाते रहते हैं। बाबा ने कहा था अहमदाबाद में ....मंदिर के जो ट्रस्टी हैं जैनी लोग हैं उन्हों को किताब (जो दिलवाला मंदिर पर अपना छपा हुआ है) दे समझाना है, यह किसका यादगार बना है। शिवबाबा हमको फिर से वो ही ज्ञान दे स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। इस कलियुग का विनाश होना है। ऐसा कब कोई ने समाचार नहीं लिखा है कि मंदिर बनाने वाली कमेटी को निमंत्रण दिया वा उनके पास गए। उनको बताया यह समझो तो सही कि मंदिर में कौन हैं ..... आदिदेव, आदिनाथ कौन हैं। जैनियों के छोटे–2 मंदिर तो सब जगह हैं। यह बड़ा है; परन्तु किसको पता

(अधूरी मुरली)